केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

Central Board of Secondary Education, Delhi

(परीक्षार्थी भरें To be filled in by the candidate)

(परीक्षार्थी प्रशन–पत्र के ऊपर लिखे कोड़ को दर्शाये गये बॉक्स में लिखें
Candidate should write code no. as written on the top of the question paper in this box → 3/3

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer-book (s) used → N12

परीक्षा का नाम Name of the examination AISSE-2012

कक्षा Class Xth

विषय Subject Hindi-A

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination Thursday (22/03/12)

उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper Hindi CourseA (002)

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो सम्बन्धित वर्ग में ✓ का निशान लगायें

B	D	H	S	C

B = दृष्टिहीन, D = मूक एवं बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक, C = डिस्लेक्सिक
If Physically challenged, tick the category
B = Blind, D = Deaf & Dumb, H = Physically Handicapped, S = Spastic, C = Dyslexic

क्या लेखन–लिपिक उपलब्ध करवाया गया हां / नहीं
Whether write provided Yes / No ✓

खण्ड ग

Q.(10)-

(i)- (घ) भारतरत्न

(ii)- (घ) अजेय संगीतयात्रा के कारण

(iii)- (ग)- संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन भर संजोए रखना

(iv)- (घ)- नई दिल्ली स्थित संगीत और नाट्यकला से संबद्ध संस्था

(v)- (ग)- मिश्र वाक्य

प्र०11- (ख)- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है। शहनाई को मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला वाद्य माना जाता है। बिस्मिल्ला खाँ साहब शहनाई वादन के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखते थे। इसीलिए उन्हें मंगलध्वनि का ~~क~~ नायक कहा गया।

(ग) संस्कृत व्यक्ति वह होता है जो अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नई उपयोगी वस्तु का आविष्कार करता है। व्यक्ति की आविष्कार करने की योग्यता को संस्कृति कहा जाएगा। एवं जब कोई व्यक्ति किसी आविष्कृत की हुई वस्तु का प्रयोग करता है उसी उसकी सभ्यता कहा जाएगा।

(घ) एक कहानी यह भी पाठ में लेखिका कहती है कि हमारे समय में हम आस पड़ोस के लोगों के साथ बहुत मिले जुले थे। हमारे पड़ोस के घरों में जाने पर कोई रोक नहीं थी। पड़ोस के बच्चों के साथ खेला कूदा करते थे, समय कब कट जाता था पता ही नहीं चलता परंतु आज महानगरों में ~~फ्ल फ्ले~~ फ्लैटों में रहना वाले लोग एक दूसरे से ~~पू~~ पूरी तरह वंचित है न तो वे एक दूसरे घरों में जाते है और न ~~व~~ एक दूसरे को जान पाते है। अतः अपनी निजी व्यस्तता के कारण ~~उनकी~~ उनका कल्चर भी बदल गया है।

(ङ) फादर कामिल बुल्के अगर किसी के साथ ~~किस~~ रिश्ता जोड़ते थे तो कभी तोड़ते नहीं। जब भी वे दिल्ली आते हमसे मिलने अवश्य आया करते। घर के हाल-चाल के बारे में पूछना उनकी ~~आ~~ आदत थी। फादर बुल्के सभी के सुख दुख में सदैव साथ देते। ~~लेखक~~ लेखक के बीवी और बच्चों के देहांत के पश्चात फादर ने लेखक ~~को~~ के दुख में साथ दिया और उसे सांत्वना प्रदान की।

11. (क) → द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के संबंध में अनेक महिलाओं का उदाहरण देते हुए स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन किया। ~~उनमे~~ उनमें से दो महिलाएँ थी – रुक्मणी और ~~शकुंतला~~ अत्रि की पत्नि। द्विवेदी जी ने बताया है कि रुक्मणी ने कृष्ण जी को जो प्रेमपत्र लिखा वह संस्कृत भाषा में ही था। इससे यह स्पष्ट होता है कि पहले के समय में भी स्त्रियाँ पढ़ी लिखी होती थी। उन्होंने कहा कि अत्रि की पत्नि नें घंटो पूजनीय महात्मा के साथ बहस संस्कृत भाषा में ही की थी। अतः पहले के समय में भी स्त्रियों को पढ़ाया जाता था। इसीलिए स्तियों को शिक्षा देनां अनिवार्य है।

12. (क) राम मृदुभाषी थे, उन्होंने ~~परशुराम को~~ अपने को परशुराम का दास बताते हुए संबोधित किया और उनसे मीठे शब्दों में अपराध के लिए क्षमा माँगी। राम अत्यंत सहनशील एवं बड़ों की आज्ञा का पालन करने वाले भी थे। उन्होंने परशुराम से ~~अपने~~ कहा कि मैंने जो दंड किया है उसके लिए आपकी जो आज्ञा हो कृपया मुझे बताए। वे परशुराम के क्रोध को चुपचाप सहते रहे।

(ख) परशुराम ने सेवक उसे कहा जो सेवक का काम करे और ~~यदि वह शत्रु के~~ शत्रु उसे जिसने उनका धनुष तोड़ा उनके लिए वह शत्रु से कम नहीं है।

(ग) सहस्रबाहु एक राक्षस था जिसकी सैंकड़ो भुजायें थी।

13. (क) → 'छाया मत छूना' कविता में प्रभुता की शरण को मृगतृष्णा कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार धूप से चिलचिलाती गर्मी में रेगिस्तान या दूर सड़क पर पानी के होने की आशंका होती है परंतु वहाँ पहुँचने पर कुछ नहीं मिलता उसी प्रकार प्रभुता मनुष्य के लिए धन दौलत मात्र मृगतृष्णा के समान एक छलावा है। जिस प्रकार हर अँधेरी रात के बाद सुबह होती है उसी प्रकार हर सुख के अंदर दुख का अस्तित्व विद्यमान रहता है।

(ख) → कन्यादान कविता में माँ बेटी को सीख देती है कि तुम अपनी कोमलता और सुंदरता पर आकर्षित होकर मन ही मन खुश मत होना क्योंकि ये समाज स्त्री की सुंदरता कोमलता और भावुकता को उसकी कमजोरी समझता है। माँ बेटी को समझाते हुए कहती है कि जो जैसी चीज जिस कार्य के लिए बनी है उसी कार्य के लिए प्रयोग करना। आग रोटियाँ सेकने के लिए होती है जलने के लिए। अंततः माँ बेटी से कहती है कि तुम समाज के गलत कायदे कानूनों को कभी स्वीकार मत करना।

(ग) → संगतकार वह व्यक्ति होता है जो प्रसिद्ध व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान करता है परंतु स्वयं चर्चा में नहीं आता।

(14) कठोर हृदया समझी जाने वाली दुलारी टुन्नु की मृत्यु पर विचलित हो उठी क्योंकि वह टुन्नु को मन ही मन चाहने लगी थी। उसे पता था कि टुन्नु उसके शरीर से नहीं उससे प्रेम करता है। टुन्नु उसके लिए होली के उपहार के रूप में साड़ी लाया तो उसने भला बुरा कहकर उसे भगा दिया। इस पर टुन्नु ने कहा कि वह इसके बदले में उससे कुछ माँग नहीं रहा। दुलारी ने पहली बार ऐसा युवक देखा था जो प्रेम के बदले में कुछ ना माँगे क्योंकि उसके समाज में तो सौदेबाजी ही होती थी। टुन्नु के मौत की खबर सुनने के बाद दुलारी को उसी स्थान पर गाने के लिए बुलाया गया जहाँ टुन्नु को मारा गया था। वह टुन्नु द्वारा दी हुई साड़ी पहनकर चली गई और गाने लगी कि इसी स्थान पर मेरी नाक की लौंग गिर गयी। (नाक की लौंग सुहाग का प्रतीत होती है) अतः उसका सुहाग अर्थात उसका प्रियतम यहीं पर मारा गया तो वह यहाँ कैसे आ सकती है और गाते गाते वह विचलित होकर वहाँ से चली गई।

खण्ड 'घ'

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी
दिल्ली - 6, पालमपुर रोड

PTO

~~27, रोहिणी नगर~~
~~पालम पुर रोड~~
~~नई दिल्ली~~

(खण्ड 'घ')

15

रोहिणी नगर
27 पालमपुर रोड
नई दिल्ली
22/03/12

प्रिय,

मैं यहाँ कुशल से हूँ ~~आशा~~ आशा करती हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल से होगे। मेरे विद्यालय में अभी परिक्षाएँ आरम्भ होने वाली है। माताजी ने बताया कि तुम समय पर अपना कार्य पूरा नही करते। समय पर कार्य पूरा करना एक बहुत बड़ी ~~जिम्मे~~ जिम्मेदारी है। यदि हम समय पर कार्य पूरा कर ले तो हम आगे के निश्चिंत हो जाते है। यदि तुम समय पर कार्य पूरा नही करोगे तो परीक्षा के समय तुम्हे परेशानी होगी। तब तुम अपनी पढ़ाई मे ज्यादा समय नही दे पाओगे अंतत: तुम्हारे अंक अच्छे नही आएँगे। इसीलिए समय पर कार्य न पूरा करने से हानियाँ ही ~~होती है~~। इसीलिए तुम्हें अपने सभी

कार्यों को समय पर पूरा कर लेना चाहिए। ताकि आगे वाली परेशानी से बच सको। इसीलिए कहा भी गया है –

"काल करे सो आज कर
आज करे सो अब
पल में परलय होएगी
बहुरि करेगो कब"

माता पिता को मेरा प्रणाम कहना और छोटी बहन को खूब सारा प्यार

तुम्हारी प्रिय बहन
क.ख.ग

16

पेड़ पौधे और हमारा जीवन

प्रस्तावना :- पेड़ पौधे हमारे जीवन के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। पेड़ पौधों के बिना हमारा जीवन कुछ भी नहीं फिर भी हम इस अमूल्य वस्तु को लगातार हानि पहुँचा रहे हैं। अंतत: हमारी करनी हमीं पर हम पर ही भारी पड़ेगी।

पेड़-पौधों का महत्व :- मानव जीवन के लिए पेड़ पौधों का बहुत अधिक महत्व होता है। पेड़ पौधे हमें साँस लेने के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

और हमारे द्वारा छोड़ी हुई हानिकारक गैसों को खुद ले लेते हैं। पेड़ पौधे हमें छाया प्रदान करते हैं ये प्रकृति को हरा-भरा और संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उपयोगिता :- पेड़ पौधे वास्तव में हमारे लिए बहुत उपयोगी होते हैं। पेड़ पौधों द्वारा ही हमे खाने के लिए भोजन मिलता है। इनसे हमे नए नए फल प्राप्त होते हैं। ये बारिश के पानी को सोखकर पानी के स्तर को भी बढ़ाते हैं। पेड़ पौधे वास्तव में हमारे लिए बहुत ज्यादा उपयोगी होते हैं।

मानव-जीवन के सुखी बनाने के साधन :- पेड़ पौधों मानव जीवन को सुख व समृद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ो से हमें आम तौर पर कई सारे उत्पाद प्राप्त होते हैं जैसे लकड़ी, फूल आदि। पेड़ों की छाल से कागज बनाए जाते हैं। अतः पेड़ पौधे हर रूप से हमारे लिए जरूरी है। बसंत के मौसम में पेड़ पौधों पर लहलहाती हुई पत्तियाँ हमारे अंदर ताजगी की उमंग भर देते हैं।

उपसंहार :- अतः पेड़ पौधो को हमें हर हाल में काटने से बचाना चाहिए। इसी में समस्त मानव जन की भलाई है। हमें अधिक से अधिक पेड़ पौधे अपने आस-पास लगाने चाहिए। जिससे हमारा वातावरण स्वच्छ एवं हरा भरा रह सके।

12

खण्ड 'क'

1\. (i) (ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में।

(ii) (ग) एक दीपक बुझाकर अन्य दीपक जलाना

(iii) (ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण।

(iv) (ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की।

(v) (घ) दूर

2\. (i) (ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता।

(ii) (ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है।

(iii) (क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती है।

(iv) (घ) असफलता सफलता का आधार

(v) (ग) बुनियाद

(3) (i) (ग) दुर्भाग्य का अभिशाप

~~(ii) (ग) मार्ग की बाधाओं को हटाना~~

(ii) (घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना

(iii) (ग) सागर, आकाश, भूमि और पर्वत।

(iv) (घ) मैं जीवन की दुर्गम और नीरस राह का राहगीर हूँ।

(v) (ग) तत्पुरुष

(4) (i) (ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना

(ii) (ग) पत्तों की हरियाली।

(iii) (ग) समुंदर को मीठा जल देने के लिए

(iv) (ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर।

(v) (ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता

~~खण्ड~~ खण्ड 'ख'

5→ (i)→ (ग)→ मिश्र वाक्य ✓

(ii)→ (ग) ✓

(iii)→ (ख) ✓

(iv)→ (ग) ✓

6)→ (i)→ (ख) ✓

(ii)→ (ग) ✓

(iii)→ (क) ✓

(iv)→ (ख) ✓

(7) (i) (ख) ✓

(ii) (ग) ✓

(iii) (ग) ✓

(iv) (घ) ✓

(8) (i) (ख) ✓

(ii) (घ) ✓

(iii) (घ) ✓

(iv) (घ) ✓

(9) (i) (ग) रूपक ✓ (ii) (घ) ✓ (iii) (क) श्लेष - यमक ✓ (iv) (ग) उत्प्रेक्षा ✓

0903

2012

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

01 उत्तर–पुस्तिका लेते ही इसके पृष्ठ गिनकर देख लें कि इसमें कवर सहित 32 पृष्ठ हैं एवं सही क्रम में है।

02 उत्तर–पुस्तिका, पूरक उत्तर–पुस्तिका, ग्राफ पेपर, नक्शे आदि के ऊपर किसी भी स्थान पर (अन्दर अथवा बाहर) कोई विशेष चिन्ह आदि न लगायें।

03. अपना अनुक्रमाँक नाम, विद्यालय का नाम व परीक्षा का स्थान किसी उत्तर में न लिखें।

04 अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका की क्रम संख्या उपस्थिति शीट पर लिखें।

05 उत्तर–पुस्तिका के प्रत्येक पृष्ठ के दोनों ओर तथा लाइन पर लिखें। बीच–बीच में पृष्ठ व्यर्थ ही खाली न छोड़कर अथवा अधिक चौड़ा हाशिया छोड़कर पृष्ट नष्ट न करें।

06 उत्तर–पुस्तिका के पृष्ठों को मोड़े या फाड़े नहीं और बीच–बीच में व्यर्थ ही खाली न छोड़ें। इस उत्तर–पुस्तिका के भर जाने पर ही अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका मांगें और जब तक वह नहीं भर जाये तब तक अन्य अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका न मांगें।

07 अपने उत्तरों के आरम्भ में प्रश्न पत्र में दी हुई संख्या के अनुसार संख्या लिखें।

08 पूरे प्रश्न (अथवा प्रश्न के एक भाग) के समाप्त होने पर उत्तर के नीचे रेखा खींच दें।

09 यदि आपके ग्राफ पेपर, नक्शा अथवा अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका काम में ली हो तो उसे मुख्य उत्तर–पुस्तिका साथ अच्छी प्रकार से नत्थी कर दें। परन्तु आपका अनुक्रमाँक केवल मुख्य उत्तर–पुस्तिका पर दिये हुए न पर ही लिखें। ग्राफ, नक्शे, अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका आदि पर अनुक्रमाँक न लिखें।

10 केवल काली–नीली व नीली स्याही का ही प्रयोग करें।

11 रफ अथवा कच्चे काम आदि के लिए संबंधित पृष्ठ के दांयी ओर उचित हाशिया खींच लें बाद में उस काम को एक रेखा द्वारा काट दें।

12 उत्तर–पुस्तिका अपने सहायक निरीक्षक को दिये बिना परीक्षा भवन न छोड़ें।

13 यदि परीक्षा के दौरान, कोई परीक्षार्थी निम्नलिखित में से किसी भी हरकत में शामिल पाया जाता है तो यह मान लिया जाएगा कि परीक्षार्थी ने परीक्षाओं में अनुचित साधनों को अपनाया है और उसका परीक्षा परिणाम घोषित नहीं किया जाएगा। किन्तु उस पर अन्फेयर मीन्स (यू.एफ.एम) अंकित कर दिया जाएगा:–

(क) यदि उसके पास संबंधित विषय की परीक्षा से सम्बंद्ध कागज, पुस्तकें, नोट्स अथवा कोई अन्य सामग्री पायी गयी हो;

(ख) यदि वह प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी प्रकार की सहायता प्रदान कर रहा हो अथवा प्राप्त कर रहा हो या ऐसा करने का प्रयास कर रहा हो;

(ग) यदि वह लिखने के लिए केन्द्र अधीक्षक द्वारा दी गई उत्तर–पुस्तिका के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार की सामग्री में प्रश्न अथवा उत्तर लिख रहा हो;

(घ) यदि वह उत्तर–पुस्तिका अथवा पूरक उत्तर–पुस्तिका इत्यादि के पृष्ठ फाड़ रहा हो;

(ङ) यदि वह परीक्षा केन्द्र में परीक्षा के दौरान परीक्षा स्टाफ के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति से सम्पर्क करने अथवा पत्र व्यवहार कर रहा हो या ऐसा करने का प्रयास कर रहा हो;

(च) परीक्षा कक्ष से उत्तर–पुस्तिका बाहर ले जाने पर;

(छ) परीक्षा संबंधी कोई अन्य अवांछनीय तरीकों अथवा साधनों का प्रयोग करने अथवा ऐसा करने का प्रयास करने पर;

(ज) प्रश्न–पत्र अथवा उसका कुछ भाग बाहर भेजने अथवा उत्तर–पुस्तिका / पूरक उत्तर–पुस्तिका शीट अथवा इसका कुछ भाग बाहर भेजने पर; और

(झ) परीक्षाओं के आयोजन से सम्बद्ध किसी कर्मचारी अथवा किसी परीक्षार्थी को धमकी देने पर।

Instructions to Candidates

01. Make sure that the answer-book contains 32 pages and are properly serialed in number (Including title page) as soon as you receive it.

02 DO NOT make any special sign or mark in or outside the answer-book, supplementary answer-book, graph-paper, map etc.

03. DO NOT write your roll no., name of your school or place of examination in any of your answers.

04. you must write the supplementary answer-book serial no. in the attendance sheet.

05. Write on each ruled line on both sides and do not waste pages by leaving a wider margin.

06. DO NOT tear out or fold the pages of the answer-book and do not leave any page blank unnecessarily. No supplementary answer-book (s) should be asked for unless this answer-book / the previous supplementary answer-book is finished.

07. Number your answers according to their numbers in the question paper.

08. Draw a line when a question (or a part thereof) is finished.

09. Securely tag your answer-book with supplementary answer-book (s), graph-paper, map etc. if used by you, but DO NOT write your Roll No. on the supplementary answer-book, graph-paper, map etc.

10. Use only blue-black or royal-blue ink.

11. For rough calculation etc. appropriate margin on the right-hand side of the page may be drawn. The rough calculations etc. should be crossed out afterwards.

12. DO NOT leave the examination hall without handing over the answer-book to the Asstt. Supdt.

13. If during the course of examination, a candidate is found indulging in any of the following, he/she shall be deemed to have used unfair means at the examinations, and as such his/her result shall not be declared but shall be marked as UNFAIR MEANS (U.F.M.) :-

(a) having in possession papers, books, notes or any other material or information relevant to the examination in the paper concerned ;

(b) giving or receiving assistance directly or indirectly of any kind or attempting to do so ;

(c) writing questions or answers on any material other than the answer-book given by the Centre Superintendent for wirting answers ;

(d) tearing of any page of the answer-book or supplementary answer-book etc;

(e) contacting ro communicating or trying to do so with an person, other than the Examination Staff, during the examination time in the examination centre;

(f) taking away the answer-book out of the examination hall/room ;

(g) using or attempting to use any other undesirable method or means in connection with the examination ;

(h) smuggling out Question Paper or its part of smuggling out answer-book/ supplementary answer-sheet or part thereof ; and

(i) threatening any of the officials conneted with the conduct of the examinations or threatening of any of the candidates.